ऑनलाइन पाठ्य सामग्री

2PGDCA1

UNIT–II

इकाई 2

IT TRENDS & TECHNOLOGIES

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय

बी–38 विकास भवन एम. पी. नगर जोन, 1 भोपाल

2PGDCA1

Unit .2 /इकाई 2

ई-कॉमर्स परिचय

हम सब जाने अनजाने ई-कॉमर्स का भरपूर उपयोग कर रहे हैं, इंटरनेट के उपयोग से फीस जमा करना, टिकट बुक करना, पेटीएम या फोन पे सुविधा का उपयोग करके पेमेंट करना, या खाने-पीने की वस्तुएं ऑनलाइन ऑर्डर करना सभी शामिल है।

अभी से बीस साल पहले, जब इंटरनेट का व्यापक उपयोग नहीं होता था, व्यापार का स्वरूप बिलकुल अलग था। व्यापारी और ग्राहकों के बीच संवाद स्थानीय सीमा में ही संभव था। व्यापारी स्थानीय समाचर पत्र या व्यक्तिगत संपर्कों से ही व्यापार और ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा करता था।

इंटरनेट शुरू होने के साथ ही इस परंपरा में बहुत बदलाव आ गया है। इंटरनेट के उपयोग से एक नए तरह का ज्यादा प्रभावी और एक अधिक कुशल बाजार बनाने में मदद मिली है। व्यवसाय अब अपने अस्तित्व के लिए अपने स्थानीय ग्राहक या वातावरण पर निर्भर नहीं है अब दुनिया भर में इसके सामान और सेवाओं के ग्राहक हो सकते हैं। छोटे बड़े, स्थानीय या अंतराष्ट्रीय व्यवसाय आज इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं और अपनी पहुँच बढ़ा रहे हैं। कोई भी व्यावसायिक गतिविधि जो इंटरनेट के माध्यम से की जाती है ई कॉमर्स है।

तकनीकी तौर पर अगर कहा जाये तो उत्पाद (किताबें, इलेक्ट्रॉनिक्स वस्तुएं), सेवाएं (फॉर्म भरना, टैक्सी बुक करना), धन (बिल जमा करना, पेटीऍम (paytm)) या डाटा (एस एम एस(sms), ई पुस्तकालय का उपयोग) का इंटरनेट या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से आदान प्रदान ही ई कॉमर्स है। इंटरनेट के जरिये व्यापार करना ही ई कॉमर्स है। ई कॉमर्स में ग्राहक के पास अपने पसंद और सुविधा से

वस्तुएं देखना, पसंद करना, बेचना और सुविधाओं का उपयोग बेहद आसान हो गया है।

यह ऐसी तकनीक है जो व्यावसायिक संस्थानों में बेचने वाले, खरीदने वाले की आवश्यकताओं को समझते हुए, कम दाम में अच्छा और जल्दी सामान और सुविधा उपलब्ध कराता है। यह सभी व्यावसायिक गतिविधियां जिसमे सूचना तथा धन का इलेक्टॉनिक माध्यम से लेन देन हो इंटरनेट के माध्यम से पूरा करता है।

इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स तथा पारंपरिक कॉमर्स मैं अंतर

इलेक्ट्रॉनिक तथा पारंपरिक कॉमर्स के मध्य बहुत अंतर है। दोनों बिलकुल ही अलग रूप में काम करते हैं।

पारंपरिक कॉमर्स -

1. पारंपरिक कॉमर्स व्यक्ति टेलीफोन लाइन या स्थानीय समाचार पत्रों का उपयोग करता अतः यह स्थानीय या एक निश्चित क्षेत्र में व्यवसाय करता है।

2. व्यवसाय की सभी गतिविधियां मैन्युअल अर्थात व्यक्तियों द्वारा की जाती हैं।

3. इस तरह के व्यवसाय में सूचनाओं का आदान-प्रदान व्यक्तियोँ पर निर्भर करता है। यह व्यक्तियों के द्वारा प्रसारित गतिविधि है अतः व्यक्तिगत संवाद पर इसकी पूरी निर्भरता होती है।

ई-कॉमर्स -

1. ई-कॉमर्स वैश्विक (ग्लोबल) व्यवसाय व्यवस्था के लिए इंटरनेट अथवा किसी अन्य तरह का नेटवर्क या तकनीक का उपयोग करता है।

2. व्यवसाय के लिए स्वचालित गतिविधियों का उपयोग होता है।

3. इसमें इलेक्ट्रॉनिक कम्युनिकेशन चैनल का उपयोग मुख्य है, अतः व्यक्तियों द्वारा सूचना के आदान-प्रदान पर बहुत कम निर्भर होता है। ई-कॉमर्स वेबसाइट इस तरह का वातावरण तैयार करते हैं जिसमें सभी जानकारी एक ही जगह उपलब्ध हो और सभी तक इंटरनेट द्वारा उपलब्ध हो।

ई-कॉमर्स प्रकार

1. **बिजनेस टू बिजनेस (B2B)** - जब व्यापार दो व्यवसाय के बीच हो अर्थात सामान बेचने वाला और खरीदने वाला दोनों ही व्ययसाई हो। इसमें अंतिम उपभोक्ता अर्थात ग्राहक सम्मिलित नहीं होता।

उदाहरण - एक सॉफ्टवेयर बनाने वाली कंपनी किसी अन्य व्यापारी को उसके उपयोग के लिए सॉफ्टवेयर बना कर दे इसमें दोनों ही व्यवसाई हैं, सॉफ्टवेयर बेचने वाला और उससे लेने या खरीदने वाला, ना की कोई व्यक्ति ग्राहक है।

2. **बिजनेस टू कंज्यूमर (B2C)** - यह इंटरनेट पर कॉमर्स यानी व्यापार का खुदरा रूप है। जब व्यापारी वस्तु या सेवाएं व्यक्तिगत उपभोक्ता को पहुंचा दें, उपभोक्ता यानी ग्राहक व्यवसाय की वेबसाइट के माध्यम से व्यवसाई तक पहुंचे, आवश्यक वस्तु को उसके चित्र विवरण तथा अन्य लोगों की राय पढ़कर मंगवाए तथा व्यवसाई सीधे सामान उपभोक्ता को उसके घर या बताएं स्थान पर ही उपलब्ध करवाएं। उदाहरण फ्लिपकार्ट, मिंत्रा आदि

3. **कंज्यूमर टू कंज्यूमर (C2C)** - इस तरह के मॉडल में कंज्यूमर यानी ग्राहक स्वयं ही सामान, सेवाएं अन्य ग्राहक तक पहुंचा दे, जिनके बीच में कोई कंपनी उपस्थित नहीं है। इस तरह के व्यापार में व्यक्ति स्वयं अपना सामान अन्य व्यक्तियों को बेच या खरीद सकता है। यह सामान्यतः एक तीसरे व्यक्ति या पार्टी के माध्यम से किए जाने वाला मॉडल है। यहां तीसरा व्यक्ति या पार्टी ऐसा ऑनलाइन माध्यम उपलब्ध कराते हैं, जिसके द्वारा कंज्यूमर और कंज्यूमर के

मध्य लेन देन होता है। सामान्यतः इस मॉडल में उपयोग की गई वस्तुएं जैसे कार, बाइक, फर्नीचर, मोबाइल, लैपटॉप आदि की बेच और खरीद की जाती है।

उदाहरण इबे (eBay), ओएलएक्स (OLX) आदि।

4. **कंज्यूमर टू बिजनेस (C2B)** - यह B2C के बिल्कुल विपरीत कार्य करने वाला मॉडल है। इसमें उपभोक्ता व्यवसाई/ व्यापारी को सामान या सेवाएं प्रदान कराता है। ऐसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है जिन पर व्यक्ति अपने काम या सेवाएं किसी निश्चित व्यवसाय के लिए उपलब्ध कराते हैं।

उदाहरण स्वतंत्र रूप से काम करने वाले फ्रीलांसर- यह आईटी कंप्यूटर ग्राफिक्स आदि के प्रोफेशनल हो सकते हैं, जो अपना उत्पाद बनाकर ऑनलाइन माध्यमों द्वारा जिस व्यवसाय को उसकी आवश्यकता हो उपलब्ध कराते हैं।

ई-कॉमर्स के लाभ

1. **वैश्विक पहुंच** - ई-कॉमर्स के उपयोग ने स्थान की सीमाओं को मिटा दिया है। स्थानीय व्यवसाय सिर्फ उन्हीं उपभोक्ताओं के साथ अपना व्यापार और व्यवसाय कर पाते हैं जो व्यक्तिगत तौर पर उनके दुकान या स्टोर पर आएं ई-कॉमर्स में यह भौगोलिक सीमा व्यापार को प्रभावित नहीं करती।

2. **कीमत में कमी** - ई-कॉमर्स मैं सामान के परिवहन, गोदाम में सामान के रखने, इन कार्यों में आवश्यक व्यक्तियों को दिया जाने वाला वेतन, गोदाम का किराया, सामान का रखरखाव और सुरक्षा सभी में काफी कमी होती है। अप्रत्यक्ष रूप से व्यापारी को लाभ अधिक होता है, अतः वस्तुएं कम दाम में उपलब्ध कराई जा सकती हैं।

3. **हर समय उपलब्धता** - दुकान या स्टोर एक निर्धारित समय सीमा में ही खोले जा सकते हैं, पर इंटरनेट द्वारा व्यापार पूरे समय चलता है। वेबसाइट 24x7 उपलब्ध होती हैं। अतः ग्राहक किसी भी समय इन वेबसाइट के माध्यम से आवश्यक वस्तुएं ऑर्डर कर सकता है।

4. **आसान पहुंच** - व्यक्तिगत तौर पर बाजार करने में व्यक्ति/ ग्राहक को कई दुकानों पर जाकर अपनी पसंद की वस्तु का चयन करना होता है। तब भी कई बार स्थानीय बाजार में आवश्यकता की मनपसंद वस्तु नहीं मिल पाती। वेब पर व्यापार से अपने स्थान से ही कई वेबसाइट देखकर ग्राहक आवश्यक मनपसंद वस्तु चुन सकता है। उनकी कीमतों में तुलना कर अपने लिए मंगवा सकता है।

5. **बिक्री में बढ़ोतरी** - ई-कॉमर्स के उपयोग में कहीं भी कभी भी वस्तुएं देखी जा सकती हैं, ऑर्डर की जा सकती हैं। आवश्यक वस्तुएं सीधे आपको आप के स्थान पर ही मिल जाती हैं। अतः ग्राहक ज्यादा खरीदारी के लिए उत्सुक होते हैं जिससे व्यापार में भी बढ़ोतरी होती है।

6. **सुविधाएं** - ई-कॉमर्स ग्राहकों को कई अन्य सुविधाएं भी देता है। यह सुविधाएं आर्डर करने के साथ ही मिलना प्रारंभ हो जाती हैं। ऑर्डर की स्थिति- वह कब आप तक पहुंचेगा, समय, पता सब कुछ देख सकते हैं। कई माध्यमों से भुगतान कर सकते हैं। इसके अलावा वस्तु पसंद ना आने की स्थिति में वापस भी कर सकते हैं या बदल सकते हैं। यह सभी सुविधाएं ग्राहकों को बहुत आकर्षित करती हैं।

7. **बेहतर संपर्क** - ई-कॉमर्स में व्यापारी और ग्राहक के बीच सीधे संपर्क बनाता है। किसी भी मध्यस्थ के ना होने से व्यापारी और ग्राहक के बीज तेज, कुशल और भरोसेमंद संचार और संपर्क होता है।

ई-कॉमर्स की सीमाएं

1. **सीमित ग्राहक सेवा** - यदि आप दुकान या स्टोर से खरीदारी करते हैं और उत्पाद के बारे में कोई जानकारी चाहते हैं, तो वहां उपलब्ध दुकानदार से यह जानकारी ले सकते हैं। ई प्लेटफार्म पर उत्पाद की सीमित जानकारी मिलती है। इसमें अधिक जानकारी प्राप्त करने का ग्राहक के पास कोई तरीका नहीं होता।

2. **उत्पाद को स्पर्श न कर पाना** - ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म या वेबसाइट पर उत्पाद के चित्र काफी विस्तृत होते हैं, पर व्यक्तिगत रूप से आप उन्हें उपयोग करके या स्पर्श करके नहीं देख पाते। उदाहरण के तौर पर जब आप कोई स्पीकर खरीदने जाते हैं तो उसे स्टोर पर बजाकर कई अन्य स्पीकर से उसके साउंड की तुलना कर सकते हैं। यह ई-कॉमर्स प्लेटफार्म पर संभव नहीं। होता वहां उत्पाद का परिचय लिखा होता है उसके आधार पर ही उत्पाद का चुनाव करना होता है।

3. **सुरक्षा** - ई-कॉमर्स की एक चुनौती व्यापार की सुरक्षा भी है, कई बार वेबसाइट हैकर नकली वेबसाइट या अन्य फ्रॉड माध्यमों द्वारा ग्राहकों की जानकारी उनकी क्रेडिट, डेबिट कार्ड की जानकारी या अन्य तरह का नुकसान भी कर सकते हैं। हालांकि इंटरनेट पर सुरक्षा की बहुत उन्नत तकनीकों का उपयोग हो रहा है और सुरक्षा की इन तकनीकों में तेजी से परिवर्तन भी हो रहे हैं।

4. **अन्य** - कई बार ऑर्डर की पूर्ति के समय कुछ गड़बड़ी की संभावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता। कभी-कभी वस्तु के बदलने, पहुंचने में देरी जैसी शिकायतें भी हो सकती हैं जो ग्राहकों में असंतोष का कारण होती हैं।

ई-कॉमर्स - प्रभाव

व्यापार को संचालित करने में ई-कॉमर्स का काफी प्रभाव पड़ा है। इसने ग्राहकों, बाजारों, व्यापार मॉडल के साथ-साथ समाज को भी प्रभावित किया है।

संगठनों पर प्रभाव

- ई-कॉमर्स का उपयोग करके, संगठन न्यूनतम पूंजी निवेश के साथ अपने बाजार का विस्तार राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में कर सकते हैं।
- ई-कॉमर्स के साथ, संगठन हर स्थान पर भौतिक स्टोर स्थापित करने की आवश्यकता के बिना विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकता है।

- ई-कॉमर्स के साथ, बिचौलियों को समाप्त कर दिया जाता है। उपभोक्ता स्वयं उत्पादकों से उत्पाद खरीद सकता है। यह संगठनों को उत्पाद की लागत को कम करने में मदद करता है।
- स्वचालन के कारण, ई-कॉमर्स संगठन को बेहतर ग्राहक सेवाएं प्रदान करने में मदद करता है जो संगठन की ब्रांड छवि को बेहतर बनाता है।
- ई-कॉमर्स पेपर के काम को कम करता है।
- ई-कॉमर्स व्यवसाय प्रक्रियाओं को सरल बनाने में मदद करता है और उन्हें तेज और कुशल बनाता है।

ग्राहकों पर प्रभाव

- ई-कॉमर्स के साथ ग्राहक, उत्पादों और सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला का उपयोग करने में सक्षम हैं। ग्राहक दुनिया में कहीं से भी उत्पाद चुन सकते हैं।
- ग्राहक घर, कार्यालय या यहां तक कि यात्रा करते समय कभी भी और किसी भी स्थान से उत्पादों के लिए ऑर्डर दे सकते हैं। ग्राहकों को फिजिकल स्टोर जाने की जरूरत नहीं है।
- ई-कॉमर्स आसानी से उपलब्ध जानकारी प्रदान करता है। ऑनलाइन शॉपिंग में चयन और भुगतान की प्रक्रिया काफी कम समय लेती है।
- एक ग्राहक किसी उत्पाद के बारे में समीक्षा या टिप्पणियां डाल सकता है और अंतिम खरीदारी करने से पहले अन्य ग्राहकों की समीक्षा या टिप्पणियां देख सकता है।
- ई-कॉमर्स संगठनों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ाता है और परिणामस्वरूप, संगठन ग्राहकों को उल्लेखनीय छूट प्रदान करते हैं।

समाज पर प्रभाव

- ग्राहकों को किसी उत्पाद की खरीदारी के लिए बाजार जाने की जरूरत नहीं है, इस प्रकार सड़क पर कम यातायात और कम वायु प्रदूषण होगा।

- ई-कॉमर्स उत्पादों की लागत को कम करने में मदद करता है, इसलिए कम अमीर लोग भी उत्पादों का खर्च उठा सकते हैं।
- ई-कॉमर्स के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों मैं सेवाओं और उत्पादों तक पहुंचाया जा सकता है, जो अन्यथा उनके लिए उपलब्ध नहीं हैं।
- ई-कॉमर्स सरकार को सार्वजनिक सेवाओं जैसे स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, सामाजिक सेवाओं को कम कीमत पर और बेहतर तरीके से वितरित करने में मदद करता है।

इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट सिस्टम

ई-कॉमर्स साइट इलेक्ट्रॉनिक भुगतान का उपयोग करती हैं, जब आप सामान और सेवाएँ ऑनलाइन खरीदते हैं, तो आप इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का उपयोग करके उनका भुगतान करते हैं। जब भी ऑनलाइन या सामान खरीदने के बाद ग्राहक पेमेंट करता है जिससे ग्राहक के अकाउंट से रुपए विक्रेता के अकाउंट मैं ट्रांसफर हो जाते हैं। लेकिन जब पेमेंट मैं केवल आंकड़ों तथा डिजिटल सिग्नल का हीं ट्रांसफर होता है तो इस प्रकार के पेमेंट को इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट सिस्टम कहा जाता है। आसान भाषा में कहां जाए तो चेक या नकदी के उपयोग के बिना इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से भुगतान के इस तरीके को ई-कॉमर्स भुगतान प्रणाली कहा जाता है और इसे ऑनलाइन या इलेक्ट्रॉनिक भुगतान प्रणालियों के रूप में भी जाना जाता है।

पेपरलेस ई-कॉमर्स भुगतान ने कागज के काम, लेनदेन की लागत और कर्मियों की लागत को कम करके भुगतान प्रोसेसिंग में क्रांति ला दी है। ऑनलाइन पेमेंट तत्काल हो जाते हैं, इसलिए यह सुविधाजनक है और बहुत समय बचाता है। यह महत्वपूर्ण है, खासकर आज जब हमारे जीवन का हर पहलू तेजी से होता है।

इंटरनेट-आधारित बैंकिंग और खरीदारी के बढ़ते उपयोग ने विभिन्न ई-कॉमर्स भुगतान प्रणालियों में वृद्धि की है और सुरक्षित ई-भुगतान लेनदेन को बढ़ाने, सुधारने और प्रदान करने के लिए तकनीकी विकसित की गई है। इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट आपको अपने पसंदीदा

ऑनलाइन स्टोर के माध्यम से मोबाइल से लेकर शुज़ तक सब कुछ खरीदने या ऑनलाइन इलेक्ट्रिसिटी या केबल बिल का पेमेंट करने की अनुमति देता है।

इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट सिस्टम में पेमेंट करने के बहुत से तरीके हैं जिन का उपयोग अधिक किया जाता है और इससे लोगों को बहुत से फायदे भी हैं। जिस तरह ई-कॉमर्स में ग्राहक और विक्रेता आमने-सामने नहीं होते हैं उसी तरह से इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम में पेमेंट करने के लिए ग्राहक और विक्रेता का आमने सामने होना जरूरी नहीं है।

आर.टी.जी.एस (RTGS)

आर.टी.जी.एस की फुल फॉर्म (Real Time Gross Settlement) होता है। हिंदी में रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट। यह सिस्टम व्यक्तियों और कंपनी को दो बैंकों के बीच रूपए (फंड) ट्रांसफर करने की सुविधा प्रदान करता है. आर.टी.जी.एस एक बैंक से दूसरे बैंक में धन को ट्रांसफर करने का एक इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है, जिसमें धन का ट्रांसफर वास्तविक समय पर होता है।

आर.टी.जी.एस का सरल अर्थ देखे तो इसमें कोई भी रुपए के लेन-देन का ट्रांजैक्शन तुरंत हो जाता है, जिसे रियल टाइम (Real Time) कहा जाता है। इसमें जैसे ही लाभार्थी (बेनिफिशियरी) ग्राहक की जानकारी सही-सही भर कर फंड ट्रांसफर करते हैं तो तुरंत ही वह फंड ट्रांसफर होकर लाभार्थी (बेनिफिशियरी) ग्राहक के अकाउन्ट में भेज (क्रेडिट) दिया जाता है। इसमें लगभग 30 मिनिट के अंदर लेन-देन (ट्रांजैक्शन) कंप्लीट हो जाता है। यह आमतौर पर देशों के केंद्रीय बैंकों द्वारा संचालित होता है।

आर.टी.जी.एस सिस्टम का उपयोग आम तौर पर उच्च मूल्य वाले पैसे के लेनदेन के लिए किया जाता है जिसके लिए तत्काल समाशोधन की आवश्यकता होती है। आर.टी.जी.एस के द्वारा आप कम से कम 2,00,000 रूपए तक ट्रांसफर कर सकते हैं। उससे कम की रकम (अमाउंट) का इसमे लेन-देन (ट्रांजैक्शन) नहीं होता है। आर.टी.जी.एस के द्वारा ट्रांजैक्शन के लिए कोई अधिकतम रूपए की कोई

लिमिट नहीं है, आप जितना चाहे उतना फंड ट्रांसफर कर सकते हैं, जब तक कि आपका बैंक ब्रांच आपके लिए लिमिट न तय कर दे।

आर.टी.जी.एस का उपयोग कैसे करें

आर.टी.जी.एस का उपयोग हम दो तरह से कर सकते हैं एक है ऑनलाइन तरीका और दूसरा है ऑफ़लाइन तरीका।

ऑनलाइन आरटीजीएस तरीका

आर.टी.जी.एस में ऑनलाइन तरीके का उपयोग इंटरनेट बैंकिग के माध्यम से कर सकते हैं। इसके अधीन यदि आपको किसी शख़्स को रूपए (फंड) भेजना (ट्रांसफर) करना है उसे पेई Payee अथवा बेनिफिशियरी कस्टमर आई डी (Beneficiary Customer Id) के रूप में अपने अकाउंट में जोड़ना पड़ता होता है जहाँ आपको उस शख़्स के बारे में में निम्नलिखित जानकारी भरनी होती है। बेनिफिशियरी कस्टमर का नाम व बैंक अकॉउंट नम्बर, ब्रांच का नाम, इंडियन फाइनेंशियल सिस्टम कोड (IFSC)।

उसके बाद बैंक उस शख़्स की जानकारी को चेक करता है। इस जानकारी को चेक करने में बैंक को लगभग 12-24 घंटें का समय लगता है, बैंक के द्वारा जब चेकिंग प्रोसेस पूरी तरह से पूर्ण हो जाती है तब बैंक के द्वारा लाभार्थी कस्टमर को एक्टिवटे कर दिया जाता है। जिसके बाद आप उस लाभार्थी कस्टमर को फंड ट्रांसफर कर सकते हैं।

ऑफलाइन आरटीजीएस तरीका

आर.टी.जी.एस में यदि आपको ऑन लाइन तरीके का उपयोग करना नहीं आता है तो आप ऑफ लाइन तरीके का उपयोग कर सकते है, लेकिन इसके लिए आपको बैंक ब्रांच में जाकर ठीक उसी तरह से एक इंस्ट्रक्शन स्लिप भरनी होती है, जिस तरह से आप चेक डिपॉजिट करते समय सामान्य रूप फॉर्म भरते हैं। जैसे ही आप इंस्ट्रक्शन स्लिप भरके जमा करते हैं, और इसके बाद बैंक उस इंस्ट्रक्शन स्लिप में भरी गई जानकारी को अपने सेंट्रल प्रोसेसिंग सिस्टम में जोड़ कर देता है। और

फिर जानकारी सेंट्रल प्रोसेसिंग सिस्टम पर जमा करते ही उसे आर.बी.आई को भेज दी जाती है।

सारी ट्रांजैक्शन को प्रॉसेस कर के कम्पलीट करता है और भेजने वाले बैंक के अकाउंट से अमाउंट को डेबिट करके जिस बैंक को आर.टी.जी.एस किया गया है उसके अकाउंट में उस अमाउंट को क्रेडिट कर देता है।

एन.ई.एफ.टी (NEFT)

एन.ई.एफ.टी फुल फॉर्म National Electronic Fund Transfer कहते है। हिंदी में नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फण्ड ट्रांसफर।

एन.ई.एफ.टी फण्ड ट्रांसफर का एक आसान और सरल तरीका है इसके माध्यम से देशभर में किसी भी बैंक के अकाउंट में पैसे भेज सकते है। एन.ई.एफ.टी में पैसे का ट्रांसफर आरटीजीएस की तरह रियल टाइम में ना होकर प्रति घंटा आधार (आवरली बेसिस) पर होता है। यानी जब भी कोई व्यक्ति एन.ई.एफ.टी की अनुरोध करता है तो उसका लेन-देन (ट्रांजैक्शन) तुरंत प्रोसेस नहीं किया जाता, बल्कि उन सभी ट्रांजिक्शन को एक घण्टे के बैच में प्रोसेस किया जाता है। परिणाम स्वरूप एन.ई.एफ.टी के माध्यम से फंड ट्रांसफर करने पर 0 से 120 मिनट तक का समय लग सकता है। एन.ई.एफ.टी की प्रक्रिया आरटीजीएस के मुकाबले धीमी है।

सामान्यत: एन.ई.एफ.टी का प्रयोग छोटे रकम को ट्रांसफर करने के लिए किया जाता है। एन.ई.एफ.टी का प्रयोग तब किया जाता है जब ट्रांसफर किया जा रहा एमाउंट 2 लाख से कम हो। एन.ई.एफ.टी के माध्यम से आप चाहे तो 1 रूपए का भी फंड ट्रांसफर कर सकते हैं।

लेकिन कई बार परिस्थिति ऐसी हो जाती है जहां आपको एक ऐसे बैंक ब्रांच से अमाउंट ट्रांसफर करना होता है, जिसमें आपका बैंक अकाउंट नहीं होता, तो इस तरह के बैंक ब्रांच के माध्यम से आप एक बार में अधिकतम 50000 रूपए एमाउंट तक का ही एन. ई. एफ. टी कर सकते हैं।

एन.ई.एफ.टी में आरटीजीएस की तरह से पैसे दो तरह से ट्रांसफर कर सकते है एक तो ऑफलाइन यानी इसमें आपको अपनी बैंक ब्रांच में जाकर एन.ई.एफ.टी का फॉर्म लेकर उसमे सभी जानकारी भरकर बैंक में जमा करनी होती है।

दूसरा तरीका है ऑनलाइन यानि अगर आप नेट बैंकिंग का उपयोग करते है तो आप घर बैठे ही एन.ई.एफ.टी के माध्यम से पैसे भेज सकते है। इसके लिए आपको आपको पैसे प्राप्त करने वाले व्यक्ति को एड न्यू बेनिफिशियरी में जाकर बेनिफिशियरी की डिटेल ऐड करनी होती है। पैसे प्राप्त करने वाले व्यक्ति का बैंक अकाउंट नंबर, बैंक ब्रांच, IFSC कोड पता होना चाहिए. अब आप फंड ट्रांसफर के लिए एन.ई.एफ.टी ऑप्सन चुने और वो अकाउंट सेलेक्ट करे जिसे पैसे भेजने है। भेजने वाले बैंक के अकाउंट से अमाउंट को डेबिट करके जिस बैंक को एन.ई.एफ.टी किया गया है उसके अकाउंट में उस अमाउंट को क्रेडिट कर देता है।

आई.एम.पी.एस. (IMPS)

आई.एम.पी.एस फुल फॉर्म Immediate Payment Service। हिंदी में **तत्काल भुगतान सेवा** कहा जाता है।

आई.एम.पी.एस. एक ऐसी बैंकिंग भुगतान सेवा है, जिससे आप रियल टाइम में पैसों को एक खाते से दूसरे खाते में भेज सकते है। आई.एम.पी.एस. के माध्यम से किसी भी व्यक्ति को कभी भी तत्काल पैसे भेजे जा सकते है। आई.एम.पी.एस. के माध्यम से २४ घंटे और बैंक हॉलिडे में भी पैसे ट्रांसफर कर सकते है जबकि एनईएफटी और आरटीजीएस में आप ऐसा नहीं कर सकते।

आई.एम.पी.एस. के द्वारा आप 24 घंटे में कभी भी ATM, इंटरनेट या मोबाइल के द्वारा बैंकिंग सुविधा का लाभ ले सकते है। अगर आपके पास इन्टरनेट कनेक्शन नहीं है फिर भी ussd कोड या एसएमएस के माध्यम से भी इसका उपयोग कर सकते है।

आई.एम.पी.एस. के द्वारा फण्ड ट्रांसफर कैसे करे -

आई.एम.पी.एस. के उपयोग के लिए आपको मोबाइल बैंकिंग एक्टिवेट करनी होगी और निम्न तरीके द्वारा फंड ट्रांसफर किया जाता है।

बैंक अकाउंट नंबर और IFSC कोड के द्वारा -

इसके लिए आपको लाभार्थी (बेनिफिशियरी) का बैंक अकाउंट नंबर और IFSC कोड पता होना चाहिए। मोबाइल बैंकिंग एप्प में लॉगइन कर IMPS using Bank Account Number and IFSC कोड वाला आप्शन चुने और लाभार्थी (बेनिफिशियरी) का बैंक अकॉउंट नम्बर और IFSC कोड और amount डालकर submit पर क्लिक करे। उसके बाद अपना OTP/MPIN डाले आपको successfullly fund transfer का message दिखाई देगा।

मोबाइल नंबर और MMID के द्वारा-

इस आप्शन के द्वारा आप लाभार्थी (बेनिफिशियरी) को उसके मोबाइल नंबर और MMID के द्वारा पैसे भेज सकते है। इसके लिए आपको IMPS using mobile and MMID वाला आप्शन चुनना होगा। यहाँ आपको लाभार्थी (बेनिफिशियरी) का मोबाइल नंबर, MMID और amount डालना है और submit कर देना है। फिर अपना MPIN डालना है और पैसे ट्रांसफर हो जायेंगे। MMID को प्राप्त करने के लिए आप अपने बैंक की इंटरनेट बैंकिंग सुविधा को इस्तेमाल कर सकते है।

ATM के द्वारा

ATM से आई.एम.पी.एस. करने के लिए आप जिसे भी पैसे का भुगतान करना चाहते है उसका डेबिट कार्ड का नंबर होना बहुत ज़रुरी है। आई.एम.पी.एस. करने के लिए सबसे पहले अपने डेबिट कार्ड को एटीएम में स्वाइप करे, तत्पश्चात अपने एटीएम की पिन डाले। पिन डालने के बाद फंड ट्रांसफर के विकल्प का चयन करे और आई.एम.पी.एस. के Option पर जाये। आगे के निर्देशों का पालन करें जिसमें आपका मोबाइल नंबर, जिस व्यक्ति को पैसे ट्रांसफर करना है उसका मोबाइल नंबर और MMID नंबर इंटर करना होगा।

एस.एम.एस के द्वारा

अगर आपके पास इंटरनेट कनेक्ट नहीं है तब भी आई.एम.पी.एस. सर्विस का इस्तेमाल करके एसएमएस द्वारा रुपए भेज सकते हैं। आई.एम.पी.एस. फॉर्मेट के बेनिफिशियरी को जोड़ सकते हैं। यह एसएमएस फॉरमैट बैंक से प्राप्त कर सकते हैं।

पेमेंट गेटवे

प्रत्येक व्यक्ति इंटरनेट, कंप्यूटर एवं मोबाइल से कदर जुड़ गया है वह कि वह अपने सभी काम ऑनलाइन ही करने लगा है। किसी भी प्रकार की ऑनलाइन खरीदारी के लिए यूजर पेमेंट भी ऑनलाइन करता है। जब भी फ्लिपकार्ट, अमेज़न जैसे वेबसाइट पर डाटा अथवा सर्विस को ऑनलाइन खरीदते हैं, तो एक ऑप्शन आता है बाय नाउ (Buy Now) तो इसका मतलब होता है जो सर्विस या प्रोडक्ट को चुना है उसको खरीदना चाहते हैं। जब बाय नाउ (Buy Now) बटन को दबाते हैं तो उस समय एक पेमेंट फॉर्म खुल जाता है। पेमेंट से संबंधित जानकारी डालनी पड़ती है जैसे नेट बैंकिंग, क्रेडिट या डेबिट कार्ड से संबंधित जानकारी। यूज़र से डाटा अथवा सर्विस के लिए तय कीमत को यूजर के बैंक अकाउंट से निकाल कर सर्विस देने वाली कंपनी के अकाउंट में ट्रांसफर करता है। पेमेंट गेटवे एक ऐसी सर्विस है जिसके जरिए किसी भी ई-कॉमर्स बिजनेस में ग्राहक द्वारा ऑनलाइन स्टोर को क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड अथवा नेट बैंकिंग से भुगतान किया जाता जाता है, जिसमें ग्राहक द्वारा ऑनलाइन भेजा गया रुपया सीधे स्टोर मालिक के खाते में पहुंच जाता है। ई-कॉमर्स वेबसाइट पर जो पेमेंट के लिए सुविधा होती है वह पेमेंट गेटवे के द्वारा ही पूरी होती है। पेमेंट गेटवे का फायदा उन दोनों व्यक्तियों को होता है जो पेमेंट करता और जो पेमेंट प्राप्त करता है। पेमेंट करने वाले के लिए इसका फायदा यह है कि वह चीज अथवा प्रोडक्ट को खरीदना चाहता है उसकी पेमेंट करने के लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं होती है और वह पेमेंट

ऑनलाइन ही कहीं से भी आसानी कर सकता है। पेमेंट प्राप्त करने वाले व्यक्ति को इससे यह फायदा है कि अकाउंट नंबर बिना बताएं ही भुगतान ले सकता है।

पेमेंट गेटवे एक ऐसी सुविधा है जिससे ऑनलाइन ई कॉमर्स वेबसाइट पर प्रोडक्ट एवं सर्विसेज को खरीदने वाले आसानी से ऑनलाइन माध्यम जैसे डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड अथवा नेट बैंकिंग से भुगतान कर सकें। पेमेंट गेटवे ई-कॉमर्स व्यवसाय एवं ग्राहकों के बीच तीसरा पक्ष होता है जो ग्राहकों से सुरक्षित रूप से भुगतान लेता है और इसे व्यापारियों के बैंक खाते में भेजता है। यहां यह बात समझना जरूरी है की पेमेंट गेटवे की जरूरत कस्टमर को नहीं पड़ती है। यह जो ई-कॉमर्स सर्विस प्रदान करते हैं उन लोगों के लिए जरूरी है।

पेमेंट गेटवे प्रक्रिया कैसे होती है

1. सबसे पहले ऑनलाइन किसी प्रोडक्ट को खरीदते हैं और पेमेंट के लिए प्रोसेस करते हैं तो पेमेंट गेटवे की स्क्रीन दिखाई देती है। जिसमें आप पेमेंट करने के लिए कार्ड, नेट बैंकिंग, यूपीआई आदि ऑप्शन देख सकते हैं।

२. अब आप पेमेंट करने के लिए कोई एक ऑप्शन चुनते हैं और अपनी जानकारी डालते हैं। अगर नेट बैंकिंग आपने सिलेक्ट किया है तो आप सीधे बैंक से नेट बैंकिंग लॉगइन पेज पर रिडायरेक्ट होते हैं।

३. अब व्यापारी के बैंक अकाउंट के पास पेमेंट संबंधी जानकारी भेजी जाती है। यह वही बैंक अकाउंट है जिसमें आपकी पेमेंट जाएगी।

4. इसके बाद आपकी बैंक इस ट्रांजैक्शन को अप्रूव करेगी और जो रकम आपको पे करना है वह व्यापारी के बैंक अकाउंट में ट्रांसफर कर देगी।

5. पेमेंट सक्सेसफुल होने के बाद पेमेंट गेटवे व्यापारी की वेबसाइट पर आपको रीडायरेक्ट कर देता है अगर पेमेंट सक्सेस हुई तो सक्सेस का मैसेज आप देख सकते हैं या अगर पेमेंट फेल हो गई हो तो पेमेंट डिक्लाइन का देख सकते हैं।

इस पूरी प्रक्रिया को होने में दो से तीन सेकेंड के समय लगता है। व्यापारी के बैंक अकाउंट में आपके द्वारा दी गई पेमेंट एक-दो दिन में क्रेडिट हो जाती है

भारत में उपलब्ध कुछ पेमेंट गेटवे कंपनी -

CCAvenue: CCAvenue 2001 में लांच हुआ था और अब यह भारत का सबसे पुराना और बेहतरीन पेमेंट गेटवे बन चुका है | स्नैपडील (Snapdeal) जो कि एक ई-कॉमर्स वेबसाइट है वह ट्रांजेक्शन के लिए CCAvenue का उपयोग करती है|

PayPal: आज के समय में Paypal एक बहुत मशहूर कम्पनियों में से एक है जिसके पास 200 Million से अधिक कस्टमर है. Paypal पेमेंट गेटवे सर्विस से हम आसानी से पेमेंट भेज सकते हैं और ले सकते हैं और यह पूरी दुनिया में उपयोग होने वाली कंपनी है

Instamojo Payment Gateway: Instamojo पेमेंट गेटवे भी एक ऑनलाइन पेमेंट गेटवे है जो कि ऑनलाइन पैसा भेजने और लेने के लिए मदद करती है | Instamojo की सबसे अच्छी बात यह है कि इसकी ट्रांजेक्शन फीस फ्री है और इससे हम आसानी से पैसा भेज सकते हैं और ले सकते हैं और ऑनलाइन शॉपिंग भी कर सकते हैं| Instamojo भारत की कंपनी है और अभी यह International Debit/Credit Card सपोर्ट नहीं करती है|

PayTm Payment Gateway: आपको पता ही होगा की आज PayTm पेमेंट गेटवे में हर रोज इस्तेमाल होने वाली कंपनी बन चुकी है और इस कंपनी पर यूजर का ट्रस्ट बहुत ज्यादा है| PayTm पेमेंट गेटवे से आप अधिक मात्रा में ट्रांजेक्शन कर सकते हैं और पेमेंट भेज सकते हैं और ले सकते हैं | जैसे ही PayTm पेमेंट गेटवे लॉन्च हुआ उसी 1 दिन में पेटीएम पेमेंट गेटवे के 1 मिलियन से ज्यादा कस्टमर बन गए। जिससे आप अंदाजा लगा सकते हैं कि भारत की आज वह कितनी मशहूर पेमेंट गेटवे है|

PayUmoney Payment Gateway: PayUMoney भी एक ऑनलाइन पेमेंट गेटवे है जो कि ऑनलाइन पैसा भेजने और लेने के लिए मदद करती है| बहुत सी बड़ी बड़ी कंपनियां जैसे कि Goibibo, BookMyShow, Travelyaari आदि PayUmoney का उपयोग करती हैं | PayUmoney भी बाकी कंपनियों की तरह बहुत सुरक्षित है |

डेबिट कार्ड

डेबिट कार्ड एक प्लास्टिक कार्ड है और यह बैंक द्वारा अपने ग्राहकों को लेनदेन के लिए दिया जाता है। आजकल हर बैंक अपने ग्राहक को अकाउंट ओपन करने के साथ ही डेबिट कार्ड दे देता है, जिसे ATM कार्ड भी बोलते हैं। इसके जरिए आप बिना बैंक की लाइन में लगे एटीएम से आसानी से पैसे निकाल सकते हैं। डेबिट कार्ड से आप उतने ही पैसे निकाल सकते हैं जितने आपके अकाउंट में हैं। मतलब अगर आपके अकाउंट में पैसे नहीं हैं तो यह कार्ड आपके किसी काम का नहीं है।

डेबिट कार्ड के फायदे

- इसका सबसे बड़ा फायदा होता है कि इसके होने पर आपको जरूरत से ज्यादा कैश लेकर चलने की जरूरत नहीं होती है।
- यह आपका चलता-फिरता बैंक अकाउंट होता है और इससे जब चाहें एटीएम के जरिए खाते में उपलब्ध धनराशि निकाल सकते हैं।
- यह निशुल्क होता है और इसका कोई मासिक ब्याज वगैरह नहीं लिया जाता है। कुछ बैंक एक सालाना फीस लेते हैं, जो बहुत साधारण सी होती है।

क्रेडिट कार्ड

यह भी दिखने में डेबिट कार्ड जैसा ही होता है और इसके जरिए भी आप डिजिटल लेनदेन कर सकते हैं। हालांकि डेबिट कार्ड के लिए जहां बैंक में अकाउंट की जरूरत होती है, क्रेडिट कार्ड के लिए यह जरूरी नहीं होता है। कई फाइनैंस कंपनियां भी क्रेडिट कार्ड जारी करती हैं। क्रेडिट कार्ड लेते वक्त इसमें आपकी चुकाने की क्षमता को ध्यान में रखते हुए एक लिमिट तय की जाती है, जो महीने () 10-20 हजार से लेकर लाखों में हो सकती है।

इसके जरिए आप महीनेभर जो भी खरीददारी करते हैं, उसका भुगतान महीने के अंत में बैंक द्वारा बताई गई तारीख तक करना होता है। तय तारीख तक भुगतान ना करने पर बैंक जुर्माना लगाता है।

क्रेडिट कार्ड के फायदे

- क्रेडिट कार्ड का सबसे बड़ा फायदा यही है कि बैंक अकाउंट में अगर किसी समय पैसे नहीं भी हैं, तब भी आप शॉपिंग कर सकते हैं।
- इसके जरिए आप प्रॉडक्ट्स को ईएमआई यानी आसान किस्तों पर खरीद सकते हैं।
- आपात स्थिति में इससे कैश भी निकाल सकते हैं, हालांकि उसका शुल्क काफी ज्यादा होता है। इसलिए आमतौर पर क्रेडिट कार्ड से कैश निकालने से बचना चाहिए।

इंटरनेट बैंकिंग

इंटरनेट बैंकिंग आज एक बहुत प्रचलित और एक उपयोगी साधन है, जिसका नाम हम सब ने सुना है, और आज बहुत से लोग इसका उपयोग भी कर रहे है| इंटरनेट बैंकिंग का इस्तेमाल करने से बहुत से फ़ायदे होते है जिस कारण आज इंटरनेट बैंकिंग तेज़ी से आगे बढ़ रही है| इंटरनेट बैंकिंग, बैंक के द्वारा दी जाने वाली ऐसी सुविधा है जिसके जिसके जरिए ग्राहक आसानी से घर बैठे ही इंटरनेट की सहायता से अपने बैंक अकाउंट का आसानी से कहीं भी और कभी भी उपयोग कर सकते हैं| नेट बैंकिंग उन सभी के लिए बहुत ही उपयोगी है जो अपने काम में व्यस्त रहने के कारण बैंक नहीं जा पाते या बैंक मैं लंबी लाइन की की वजह से परेशान होते हैं और बैंक जाना पसंद नहीं करते करते हैं| नेट बैंकिंग की सहायता से वे अपने मोबाइल या कंप्यूटर की मदद से बैंक संबंधी सभी कार्य तेजी से एवं आसानी से पूरा कर सकते हैं|

इंटरनेट बैंकिंग का इस्तेमाल इंटरनेट द्वारा बैंक से ट्रांजैक्शन के लिए किया जाता है| इंटरनेट बैंकिंग (Internet Banking) को नेट बैंकिंग (Net Banking), ऑनलाइन बैंकिंग (Online Banking), वेब बैंकिंग (Web Banking), वर्चुअल बैंकिंग (Virtual Banking), ई-बैंकिंग (E-Banking) के नाम से भी जाना जाता है|

इंटरनेट बैंकिंग का उपयोग करने के फायदे

- नेट बैंकिंग से वह सभी सुविधाएं मिलती हैं जो बैंक जाकर प्राप्त करनी होती है| जैसे बिना बैंक गए ही पासबुक, क्रेडिट कार्ड, चेक बुक आदि कई चीजों के लिए ऑनलाइन ही आवेदन कर सकते हैं|
- बैंक एक निश्चित समय के लिए ही खुलते हैं, जबकि इंटरनेट बैंकिंग से दिन रात किसी भी समय कार्य कर सकते हैं|
- बैंक अकाउंट के बैलेंस को ऑनलाइन देखने की सुविधा नेट बैंकिंग देती है| अपने अकाउंट के पुराने लेन देन का ब्यौरा भी देख सकते हैं|
- नेट बैंकिंग की मदद से हम ऑनलाइन शॉपिंग कर पेमेंट कर सकते हैं किसी संस्था मैं प्रवेश का या नौकरी के लिए आवेदन या फॉर्म भर सकते हैं और उसका पेमेंट भी ऑनलाइन कर सकते| मोबाइल रिचार्ज या केबल रिचार्ज आदि का भुगतान भी घर बैठे कर सकते हैं|
- जरूरत के समय नेट बैंकिंग के सहायता से हम अपने दोस्तों या रिश्तेदारों को पैसा भेज सकते हैं या पैसा प्राप्त कर सकते हैं|
- नेट बैंकिंग की मदद से अनेक प्रकार के बैंक के कार्य कर सकते हैं जैसे बैंक में फिक्स डिपाजिट यह अन्य प्रकार के खाते खोल सकते हैं| महत्वपूर्ण बात है कि इस तरह के खातों में पैसा जमा करने के लिए भी हमें बैंक जाने की जरूरत नहीं होती है| नेट बैंकिंग के सारे पैसे इन खातों में पैसा जमा करा सकते हैं|
- नेट बैंकिंग का उपयोग इलेक्ट्रॉनिक रूप में होता है जिसके कारण किसी तरह की कोई प्राप्ति रसीद संभाल कर नहीं रखनी पड़ती बल्कि आपके पास उसकी इलेक्ट्रॉनिक ट्रांजैक्शन रसीद होती है।

इंटरनेट बैंकिंग शुरू करने का तरीका

ऑनलाइन बैंकिंग के माध्यम से खाता खोलना और इसको संचालित करना बहुत ही सुगम है|

नेट बैंकिंग को शुरू करने के लिए आपका अकाउंट जिस भी शाखा में खुला हुआ है, उस बैंक के शाखा में आपको सबसे पहले जाना पड़ेगा|

फिर वहा जा कर आपको रजिस्ट्रेशन के लिए एक आवेदन फॉर्म को भरना पड़ेगा, इस फॉर्म को भरके जमा करने के बाद बैंक के द्वारा आपको बैंक की वेबसाइट पर लॉग इन करने के लिए एक आई डी और पासवर्ड दिया जायेगा| इसका उपयोग जब आप बैंक की वेवसाइट पर लॉग इन करेंगे तब करना होगा|
ऑनलाइन खाते का उपयोग करने के लिए आपको जो पासवर्ड प्राप्त होता है, उसको सुरक्षा कारणों को ध्यान में रखते हुए अच्छी तरह से संभाल कर रखना चाहिए|

लॉगइन करने के बाद जो भी आपको निर्देश मिले, उसे अच्छी तरह से पढ़ते हुए भरे| अगर आपको नेट बैंकिंग शुरू करने में किसी भी तरह की परेशानी आ रही हो, तो आप बैंक के ग्राहक सेवा नम्बर पर फ़ोन कर अपनी समस्या को बता कर समाधान मांग सकते है|

इंटरनेट बैंकिंग करते वक़्त सावधानियां

ऑनलाइन बैंकिंग करते हुए कुछ विशेष बातें ध्यान में रखनी बेहद ज़रूरी है-

आप अपने ऑनलाइन बैंकिंग की डिटेल (आईडी, पासवर्ड) किसी को भी न दें|

जिस डिवाइस से आप इन्टरनेट बैंकिंग कर रहे हैं मसलन कंप्यूटर, लैपटॉप अथवा मोबाइल उसमे लाइसेंस प्राप्त एंटीवायरस रखें, जो आपके सभी डिटेल को सुरक्षित रखेगा|

इन्टरनेट बैंकिंग के लॉग इन के लिए पब्लिक कंप्यूटर का इस्तेमाल न करना ही बेहतर होता है|

अपने पासवर्ड को समय-समय पर बदलते रहे ताकि आपके अकाउंट के हैक (hack) होने का डर न रहे| पासवर्ड अपना नाम या जन्म तिथि या शहर का नाम आदि पर ना रखें बल्कि कुछ अलग से रखें जिससे कोई दूसरा आसानी से ना समझ पाए|

इन्टरनेट बैंकिंग करते वक़्त आपको कोई भी परेशानी हो या आपको किसी भी तरह का शक हो तो तुरंत अपने बैंक की शाखा में संपर्क करें|

जिस समय इन्टरनेट बैंकिंग की आवश्यकता नहीं हो, उस समय या तो लॉगआउट कर लें अथवा इन्टरनेट ऑफ कर दें|

इंटरनेट बैंकिंग का इस्तेमाल कैसे करें

बैंक में जाकर अपना नेट बैंकिंग इंस्टॉल करवा लिया है और यदि यूजर आईडी और पासवर्ड आ चुका है तो नेट बैंकिंग का इस्तेमाल कर सकते हैं|

सबसे पहले तो आपको अपने बैंक की वेबसाइट पर जाकर अपना यूजर आईडी और पासवर्ड डालकर लॉगइन करना होगा| लॉगइन करने के बाद नेट बैंकिंग का होमपेज आपके सामने खुलेगा|

अब आप के पास बहुत सारे ऑप्शन आएंगे जैसे कि my account, Payment/fund transfer, bill payments, UPI आदि|

my account एप्लीकेशन पर क्लिक करके आप अपना पूरा बैलेंस चेक कर सकते हैं| जैसा की आप की पासबुक में डिटेल आती है वैसे ही डिटेल आपकी माय अकाउंट ऐप में आ जाएगी|

bill payments-इंटरनेट बैंकिंग की सहायता से आप कहीं पर भी बिल पेमेंट कर सकते हो|

अगर आपको किसी को पैसा भेजना है तो आपको Payment Transfer के उपर Click करना है, Click करने के बाद आप नए पेज पर चले जायेंगे जिस पर कई आप्शन होंगे उसमे से आपको Quick Transfer पर Click करना है|

Click करने के बाद आपके सामने एक नया पेज खुलेगा, इस पेज में आप जिसे पैसे भेजना चाहते है उसकी कुछ जानकारी डालनी होंगी जैसे

Beneficiary Name: जिस अकाउंट में पैसा भेजना चाहते हैं उसका Account Name

Beneficiary Account: जिस अकाउंट में पैसा ट्रांसफर करना है उसका Account Number, IFSC code

Amount: जितना पैसा ट्रांसफर करना है उतनी राशी डाले|

Purpose: जिस काम के लिए पैसे ट्रांसफर कर रहे हैं, उसका Msg डाले|

इतना करने के बाद I Accept the Term and Condition पर Tick कर दे और Submit पर Ok कर दे| Submit करने से पहले Account Number एक बार और जाँच ले|

अब आपके सामने एक विंडो खुलेगी जिसमे वह पूछ रहे होंगे की आपके द्वारा दी जानकारी सही है, अगर आपने सब जानकारी सही दी है तो Confirm बटन पर क्लिक कर दे|

लीजिये अब आपका पैसा सफलतापूर्वक ट्रांसफर हो गया है। अब आपके सामने एक पेज खुलेग जो एक रसीद होंगी इस बात की आपने इस खाते में इतना पैसा ट्रान्सफर किया गया है| अगर आप चाहे तो उस रसीद का प्रिंटआउट भी निकाल सकते है|

मोबाइल वॉलेट

आज के समय में जहां हर जगह स्मार्टफ़ोन आसानी से उपलब्ध हैं और हर कार्य के लिए एक ऐप। मोबाइल वॉलेट एक प्रकार की भुगतान सेवा है जिसके माध्यम से व्यवसाय और व्यक्ति मोबाइल उपकरणों के माध्यम से भुगतान करने के साथ-साथ भुगतान प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। यह एक ऐसी तकनीक है जिसके माध्यम से आप अपने डेबिट या क्रेडिट कार्ड की जानकारी अपने मोबाइल में डिजिटल रूप में रख सकते हैं। खरीदारी करने के लिए अपने भौतिक प्लास्टिक कार्ड का उपयोग करने के बजाय, आप अपने स्मार्टफोन, टैबलेट या स्मार्टवॉच का उपयोग करके भी भुगतान कर सकते हैं।

साधारण शब्दों में कहे तो मोबाइल वॉलेट मोबाइल में खोले जाने वाले बैंक खाते के समान है। इसमें पैसे डिजिटल मनी की तरह स्टोर किए जाते है। जिस प्रकार से इंटरनेट की मदद से अन्य खातों को बनाया गया है उसी प्रकार से यह भी एक

वर्चुअल खाता ही है जो मोबाइल डिवाइस पर पेमेंट कार्ड की जानकारी स्टोर करता है। किराने के सामानों के भुगतान से लेकर मूवी टिकट तक, आप सभी लेनदेन मोबाइल वॉलेट के माध्यम से कर सकते हैं। मोबाइल वॉलेट एक खाते से दूसरे खाते में पैसा ट्रांसफर करने के लिए यह जरूरी है कि लेने वाले और देने वाले दोनों के पास मोबाइल वॉलेट सर्विस प्रोवाइडर का खाता हो. उदाहरण के तौर पर अगर आप किसी रेस्टोरेंट में जाते हैं और वहां बिल देने के लिए आप इस वॉलेट का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह तभी मुमकिन हो सकता है जब रेस्टोरेंट किसी मोबाइल वॉलेट सर्विस प्रोवाइडर से जुड़ा हो। इससे आप बिल आसानी से अपने मोबाइल से चुका सकते हैं। आप एप, टेक्स्ट मैसेज, सोशल मिडिया या वेबसाइट से भी पैसा चुका सकते हैं।

इसे ऐसे भी समझा जा सकता है कि मोबाइल वॉलेट में आपको अपने बैंक एकाउंट, डेबिट कार्ड या क्रेडिट कार्ड के जरिए पैसे डालने पड़ते हैं या रिचार्ज कराना पड़ता है। मोबाइल वॉलेट प्रीपेड और पोस्ट पेड दोनों तरीके का होता है और प्रीपेड वॉलेट को रिचार्ज कराने की जरुरत होती है ताकि इस पैसे का इस्तेमाल आप भुगतान के लिए इस्तेमाल कर सके। यदि कुछ दिनों तक पैसे का इस्तेमाल नहीं कर पाते हैं तो पैसे एकाउंट में वापस कर दिए जाते हैं। पोस्ट पेड मोबाइल वॉलेट में आपका एकाउंट आपके वॉलेट से जुड़ा होता है, जैसे-जैसे आप अपने वॉलेट से खर्च करते जाएंगे, आपके बैंक एकाउंट से पैसे कटते जाएंगे।

इस वॉलेट का इस्तेमाल के लिए सबसे पहले उस वॉलेट में अपना खाता खोलना पड़ता है और इसके लिए मोबाइल नंबर का होना अनिवार्य है। प्ले-स्टोर से ऐप डाउनलोड करना है, और मोबाइल वॉलेट प्रदाता के साथ एक खाता बनाना है। वॉलेट इस जानकारी को एक व्यक्तिगत पहचान प्रारूप जैसे कि एक नंबर, कुंजी, या क्यूआर कोड को संग्रहीत करके कार्ड में संग्रहीत करता है। इस सेवा में खाता बनाने के बाद डेबिट या क्रेडिट कार्ड की मदद से वॉलेट में पैसा ट्रांसफर किया जा सकता है और फिर समय आने पर स्मार्ट फोन की या मोबाइल की मदद से खरीदारी या सेवाओं का भुगतान किया जा सकता है।

मोबाइल वॉलेट सुविधा प्रदान करने वालों में Paytm, MobiKwik, Oxigen Wallet, ItzCash, Freecharge आदि है।

यूपीआई (UPI)

यूपीआई यानी यूनीफाइड पेमेंट इंटरफेस (Unified Payment Interface) पैसे भेजने का एक सिस्टम है। यह एक स्मार्टफोन एप्लिकेशन है जो उपयोगकर्ताओं को बैंक खातों के बीच धन हस्तांतरित करने की अनुमति देता है। इस पेमेंट सिस्टम को इस तरह से बनाया गया है कि आम लोग भी इसे आसानी से इस्तेमाल कर सकें। यूपीआई एप्प की एक खास बात यह भी है की इसमें किसी प्रकार की बैंक डिटेल्स जैसे- IFSC Code आदि की जरूरत नही होती बस इसमें यूपीआई एप्प की वास्तविक आईडी से ही सारे ट्रांजेक्शन हो जाते है।

यूनीफाइड पेमेंट इंटरफेस सिस्टम मोबाइल नंबर पर आधारित है। हर बैंक का यूपीआई प्लेटफ़ॉर्म है, जो मोबाइल के ऑपरेटिंग सिस्टम (एंड्रॉयड, विंडोज या एपल) के हिसाब से विकसित किया गया है। यूपीआई पेमेंट सिस्टम आपके मोबाइल नंबर के जरिए खाते की जानकारी लेता है। इस नंबर के जरिए ये पक्का करता है कि सही आदमी ही अपने बैंक अकाउंट से जुड़े। आजकल सभी बैंक ग्राहकों से उनका मोबाइल नंबर मांगते हैं। यही नंबर उनके खाते से लिंक हो जाता है। यूपीआई इसी लिंक्ड मोबाइल के जरिए आपके खाते की जानकारी जुटाता है। UPI के जरिए जिसको पैसा भेजना होता है उसके भी मोबाइल नंबर की जरूरत होती है।

एक मोबाइल एप्लीकेशन से कई बैंक अकाउंट से ट्रांजेक्शन किया जा सकता है। यूपीआई से आप अपने अलग-अलग बैंक के अलग यूपीआई Pin Generate करवा सकते है। बैंक द्वारा दिए गए वर्चुअल पेमेंट एड्रेस का इस्तेमाल होता है। भुगतान करते समय आपका मोबाइल नंबर आपके बैंक के अलावा कही भी दिखाई नहीं देता है।

इसके द्वारा रुपए का आदान प्रदान करने के साथ-साथ बिजली-पानी के बिल भुगतान, किसी दुकानदार को भुगतान करने आदि के लिए बहुत सुविधाजनक है। यूपीआई का इस्तेमाल ऑनलाइन खरीदी के लिए भी किया जाता है। इससे आप डेबिट कार्ड नंबर, Expiry Code, CVV Code, OTP आदि की प्रोसेस से बच सकते है, इसकी जगह आप सिर्फ अपना UPI Login करके और फोन पर आए अलर्ट मैसेज से ट्रांजेक्शन को वेरीफाई कर सकते है।

यूपीआई कैसे काम करता है

आज की तारीख में ढेरों यूपीआई एप हैं इनमें से कुछ बैंकों के हैं और कुछ बैंकों से जुड़ी थर्ड पार्टी के हैं। फोनपे और गूगल पे भी यूपीआई पर आधारित हैं और इसके लिए इन्होने दूसरे बैंकों से करार किया है। पेटीएम का तो अपना बैंक है। यूपीआई को इस्तेमाल करने के लिए इंटरनेट से जुड़ा होना जरूरी है। सबसे पहले यूपीआई प्रोफाइल बनाए, इसके लिए आपका मोबाइल नंबर बैंक में पंजीकृत होना ज़रुरी है। अब उसी नंबर को यूपीआई एप्प में डाले, मोबाइल नंबर सत्यापित होने के बाद आपकी प्रोफाइल बन जाएगी।

यूपीआई का इस्तेमाल करने के लिए फोन में इसके एप्स को इंस्टॉल करना होगा। गूगल प्ले स्टोर में यूपीआई सर्च कीजिए। अपनी मर्जी का एप डाउनलोड कीजिए। अपने बैंक का यूपीआई एप चुन सकते हैं। एप को पहली बार खोलेंगे तो ये रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया से गुजरेगा। रजिस्ट्रेशन के दौरान आपको एप खोलने का पासवर्ड या पिन सेट करना होगा। इंस्टॉल कर लेने के बाद उसमें साइन इन करना है फिर वहां पर अपने बैंक का डिटेल दे कर अपना अकाउंट बना लीजिए। उसके बाद आपको एक वर्चुअल आईडी मिल जाएगी। चुने गए एकाउंट से जुड़ने पर आप अपनी वर्चुअल पेमेंट एड्रेस या यूपीआई आईडी बना लीजिए। वह आईडी आप के आधार कार्ड का नंबर हो सकता है या आपका फोन नंबर हो सकता है या या फिर एक ईमेल एड्रेस की तरह भी हो सकती है। ये वर्चुअल पेमेंट एड्रेस अपने चुने गए खाते में पैसा पहुंचाएगा। उदाहरण के लिए मान लीजिए आपका SBI बैंक का खाता है, और आपका मोबाइल नंबर 982xxxxxxx है, तो आपकी जो वर्चुअल

आईडी होगी वो 982xxxxxxxx@Sbi इस प्रकार होगी और यह पता बहुत आसान रखा जाएगा, इसमें आपके बैंक के साथ आपका नाम भी होगा, इस प्रकार जिस व्यक्ति को आपको पैसे भेजना है उसकी यूपीआई वर्चुअल आईडी आपके पास होना चाहिए।

भीम ऐप (BHIM APP)

भीम (BHIM) का पूरा नाम है भारत इंटरफेस फॉर मनी (Bharat Interface for Money) हैं। इसे भारत सरकार द्वारा जारी किया गया हैं। इस ऐप का नाम भारतरत्न डा. भीमराव अम्बेडकर जी के नाम पर रखा गया है।

भीम ऐप का उद्देश्य डिजिटल भुगतान प्रणाली को आगे बढ़ाना हैं| इसके द्वारा हम आसानी से किसी को भी पैसों का आदान प्रदान कर सकते हैं| ऑनलाइन शॉपिंग के समय मोबाइल से भुगतान कर सकते हैं| इसके द्वारा हम अपने मोबाइल की मदद से तेज, सुरक्षित और भरोसेमंद कैशलेस भुगतान कर सकते हैं| भीम ऐप यूनीफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) के साथ काम करता है| इसलिए यह सीधे आप के बैंक खाते से जुड़ा होता है| जिसके अंतर्गत आप एक बैंक से दूसरे बैंक में पैसे बहुत आसानी से भेज व मंगा सकते है| इससे आप आसानी से घर बैठे बस कुछ क्षणों में ही किसी भी दिन किसी भी समय अपने मोबाइल के माध्यम से पैसे भेज सकते है|

भीम ऐप का इस्तेमाल करने के लिए हमारा बैंक मैं अकाउंट होना जरूरी है तभी हम इस ऐप का इस्तेमाल कर पाएंगे| भीम ऐप का इस्तेमाल आप मुफ्त में कर सकते हैं| आप अपने मोबाइल नंबर से भी पैसे को भेज या प्राप्त कर सकते हैं| सिर्फ एक बार आपको इस ऐप को अपने मोबाइल द्वारा बैंक अकाउंट को रजिस्टर करना होगा| आपका मोबाइल नंबर आपके बैंक खाते से जुड़ा होना अनिवार्य है| अन्यथा आपका यूपीआई आईडी जनरेट नहीं होगा| सबसे बड़ी खास बात है कि भीम एप बिना इंटरनेट के भी चलाया जा सकता है।

अगर आप भीम ऐप का इस्तेमाल कर रहे हैं और जिसे आपको पैसे भेजने हैं वह किसी अन्य यूपीआई ऐप का उपयोग कर रहा है तब भी आप आसानी से उसे पैसे भेज सकते हैं| इसके लिए आपको उस व्यक्ति का यूपीआई आईडी डालना होगा| इसके अलावा और कोई भी बैंक डिटेल को नहीं भरना पड़ेगी| भीम ऐप की खासियत दूसरे यूपीआई एप के मुकाबले यह है कि अगर सामने वाले व्यक्ति का यूपीआई में अकाउंट नहीं है तब भी हां उस व्यक्ति का बैंक का आईएफएससी कोड तथा एमएमआईडी कोड डालकर भी उसके अकाउंट में पैसे भेज सकते है|

भीम एप का इस्तेमाल न केवल रुपए के आदान प्रदान करने के लिए बल्कि सभी तरह के ऑनलाइन भुगतान करने के लिए भी कर सकते हैं| इस एप को फिलहाल एंड्राइड यूज़र के लिए विकसित किया गया है और बहुत ही जल्द ये दुसरे मोबाइल प्लेटफॉर्म के लिए भी उपलब्ध हो जायेगा| यह एप अभी सिर्फ अंग्रेजी एवं हिंदी भाषा के लिए है| धीरे धीरे ये भारत के सभी भाषाओँ के लिए भी उपलब्ध हो जायेगा जिससे आम व्यक्ति को भुगतान करने में और भी आसानी होगी|

भीम ऐप का उपयोग कैसे करें

सबसे पहले Play store से भीम ऐप को डाउनलोड करे|

एप्लीकेशन चालू करने के बाद अपने फ़ोन नंबर को जोड़ दें| बैंक में जो मोबाइल नंबर पंजीकृत है उसको इस ऐप से जोड़ें|

जोड़ने के बाद आप को एक passcode generate (UPI pin) करना होगा जो 4 या 6 अंको का होगा| यह passcode आप को संभाल कर रखना होगा क्योंकि जब भी आप को इस एप से पैसे का लेने-देने करना होगा तो एप को खोलने के लिए यह passcode मांगेगा|

Passcode को सत्यापित करते ही आप के सामने select your bank का विकल्प आ जाएँगे| यहाँ से आप उस बैंक को चुन लें जिसमें आपका अकाउंट है| अकाउंट सत्यापित करने के लिए पूछेगा| सत्यापित करते ही आप का अकाउंट अपने आप बन जाएगा| अब ऑनलाइन रुपए आदान-प्रदान करने के लिए आपका मोबाइल नंबर आपका एड्रेस बन जायेगा|

अगर आपको किसी को पैसा भेजना है तो send पर click करे और जिसे पैसे भेजना चाहते है उसका फ़ोन नंबर डाले और जिसे पैसे भेजने है उसका नाम चेक कर ले| तथा अपने 4 या 6 अंको का कोड (जो अपने सेट किया था) वह डाले और pay पर क्लिक करे| ऐसा करते ही सामने वाले व्यक्ति के अकाउंट में Cash Receive हो जायेगे|

पेटीएम **(Paytm)**

पेटीएम (Paytm) फुल फॉर्म पे थ्रू मोबाइल (Pay Through Mobile) मोबाइल है| जिसका हिंदी में अर्थ मोबाइल के माध्यम से भुगतान करना है| इसके माध्यम से एक दूसरे को भुगतान करना और भुगतान प्राप्त करना काफी आसान हो गया|

पेटीएम भारत का सबसे बड़ा मोबाइल भुगतान और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म है। पेटीएम ने शुरुआत में सिर्फ ऑनलाइन मोबाइल रिचार्ज और बिल भुगतान सेवा के रूप में शुरुआत की थी और आज यह अपने मोबाइल ऐप पर उपभोक्ताओं को पूर्ण बाज़ार प्रदान करता है। पेटीएम अब ट्यूशन शुल्क का भुगतान करने, मेट्रो कार्ड रिचार्ज करने, बीमा भुगतान के लिए और हाल ही में, यहां तक कि बैंक के रूप में भी डिजिटल वॉलेट के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

यह एक वर्चुअल ई- वॉलेट है जिसमें डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, UPI या नेट बैंकिंग के माध्यम से अपने पेटीएम वॉलेट में पैसे डाल सकते हैं| फिर अकाउंट को नंबर और पासवर्ड की मदद से लॉगइन कर ले| अब ऐड मनी (Add Money) पर क्लिक करके पैसों को ऐड कर ले| एक बार जब पैसा वॉलेट में होता है, तो आप इसे किसी अन्य उपयोगकर्ता को स्थानांतरित कर सकते हैं या फिर इन पैसों से आप किसी भी ऑनलाइन शॉपिंग साइट पर जाकर सामान खरीदते समय पेमेंट कर सकते हैं| इसके अलावा फोन रिचार्ज, पानी का बिल, गैस का भुगतान आदि अन्य कार्य कर सकते हैं| अगर आप ऑनलाइन शॉपिंग ना कर के बाजार में किसी दुकान से भी खरीदारी करते हैं तब भी आप अपने पेटीएम से भुगतान कर सकते हैं| इसके लिए दुकानदार के पास भी पेटीएम अकाउंट होना जरूरी है| अगर कोई

दुकानदार से रुपए लेता है तो उसके पेटीएम द्वारा दिया गया एक कोड (QR Code) होगा और आपको अपने मोबाइल से उस कोड को स्कैन करना होगा और जितने पैसे देने हैं वह अमाउंट टाइप करना पड़ेगा|

पेटीएम का उपयोग कैसे करें

पेटीएम का उपयोग करने के लिए, आपको सबसे पहले अपने फोन पर ऐप डाउनलोड और इंस्टॉल करना होगा। वैकल्पिक रूप से, आप उनकी वेबसाइट का उपयोग भी कर सकते हैं।

फिर आपको अपना मोबाइल नंबर, ईमेल आईडी और अन्य विवरण प्रदान करके पंजीकृत करना होगा।

अंत में, आपको अपने इनबॉक्स में भेजे गए लिंक पर क्लिक करके अपना ईमेल एड्रेस सत्यापित करने के लिए कहा जाएगा।

आप आप Paytm का उपयोग कर सकते हैं|

पेटीएम अकाउंट का उपयोग

पेटीएम का उपयोग कर आप जो लेन-देन कर सकते हैं वह निम्नलिखित हैं-

प्रीपेड मोबाइल फोन, मेट्रो कार्ड, डीटीएच केबल, डेटा कार्ड को रिचार्ज कर सकते हैं|

पोस्टपेड मोबाइल फोन, लैंडलाइन / ब्रॉडबैंड, बिजली, पानी और गैस बिल आदि के लिए भुगतान कर सकते हैं|

बसों, ट्रेनों, फ्लाइट्स, फिल्मों, होटल के कमरे, आदि के लिए टिकट बुक कर सकते हैं|

उबेर कैब की सवारी के लिए भुगतान कर सकते हैं|

आप पेटीएम के ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर सामान खरीद सकते हैं|

पेटीएम आपको दूसरे लोगों के पेटीएम वॉलेट या बैंक खातों में पैसे भेजने की भी अनुमति देता है।